International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(I), October - December, 2023, pp. 105-108

किशोर छात्राओं में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं वचन (Deprivation) के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

डॉ. गीता मीणा*

सार

मानव विकास चक्र की तीसरी अवस्था किशोरावस्था है जो कि बाल्यावस्था के अंत से प्रारंभ होती है तथा व्यस्कावस्था के प्रारंभ में समाप्त हो जाती है। सामान्यतः 12 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु को किशोरावस्था मानते है परन्तु कुछ मनोवैज्ञानिक 21 वर्ष तक की आयु को किशोरावस्था मानते है। किशोरावस्था के विभिन्न परिवर्तन होते है जैसे शारीरिक मानसिक संवेगात्मक, सामाजिक विकास परिवर्तन होने से किशोर में असुरक्षा, सुरक्षा की भावना आने लगती हैं तो यह जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती है। क्या यह परिवर्तन किशोरावस्था में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पैदा करते है। सुरक्षा असुरक्षा की भावना होने से क्या ये वंचन से ग्रसित होते है। इस शोध के माध्यम से यही जानने की कोशिश होगी कि किशोर छात्राओं में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के मध्य वंचन किस प्रकार एक–दूसरे को प्रभावित करते है।

शब्दकोशः *किशोरावस्था, सुरक्षा, असुरक्षा, वंचन संवेगात्मक।*

प्रस्तावना

किशोरावस्था को जीवन को सबसे कठिन काल माना जाता है। किशोरावस्था विकास की एक चतुरदूरदर्शी अवस्था है। इस अवस्था में बालक को ना तो बालक कह सकते है ना ही व्यस्क व्यक्ति कह सकते है। इस अवस्था में बालक के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन परिपक्वता की दिशा में होते है। और किशोरावस्था में ही किशोर बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों जैसे – शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक विकास में ऐसे क्रांतिकारी परिवर्तन होते है जिसके कारण हम किशोरावस्था को एक नए जन्म की संज्ञा देते है।

किशोरावस्था शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ''एडोल्सियर'' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है परिपक्वता की ओर बढ़ना।

कुल्हन ने किशोरावस्था की परिभाषा इस प्रकार से दी गई है – ''किशोरावस्था बाल्याकाल और प्रौढ़ावस्था के मध्य का परिवर्तन काल है।''

सुरक्षात्मक परिस्थिति और किसी भी तरह के डर से मुक्त जीवन और सुरक्षात्मक मित्रता, शांति, सफलतापूर्वक विश्राम संवेगात्मक स्थिरता, आत्म स्वीकृति और अच्छी सुरक्षात्मकपूर्ण आत्म भावना किस तरह एक

* सहआचार्य (गृहविज्ञान), राजकीय कन्या महाविद्यालय टोंक, राजस्थान।

व्यक्ति अपने आपको दूसरे व्यक्तियों से सुरक्षित समझता है किस तरह सहयोग, दया, सहानुभूति और सामाजिकता को महसूस करता है। इन सभी से उसमें सुरक्षात्मकता देखी जाती है।

असुरक्षा को इस प्रकार देख सकते है। संवेगात्मक अस्थिरता, चिड़चिड़ापन, अकेलापन ईर्ष्या भय, हीनता विरोधी चिंता आज्ञा का उल्लंघन करता है एवं दुष्कार्यों को अपनाता हैं असुरक्षा महसूस करने वाला व्यक्ति हमेशा परेशान रहता है। और वह ऊपर तथा अपने काम के प्रति संदेहास्पद रहता है। और अधरिता व आंशका की प्रवृति को दिखाता है। व्यक्ति में सुरक्षात्मक भावना व असुरक्षात्मक भावना को उसकी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर विश्लेषित कर सकते है यदि इनकी आपूर्ति में वह असफल रहता है तो स्वयं को असुरक्षित और सफलतापूर्वक संतुष्टि पर सुरक्षित महसूस करता है।

अनेक अध्ययनों के द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि भूख व्यक्तित्व और सामाजिक प्रेरक तत्व और व्यक्तित्व बदलते निर्णय एवं मानसिक क्रियाएँ भी वंचन के संकेत अलग–अलग तरह के होते है। अगर वंचन के संकेतों के प्रति व्यक्ति जागरूक है तो वंचन की भावना नहीं आयेगी अगर आयेगी भी तो अत्यंत कम मात्रा में आयेगी।

वंचन को कम करने के लिए व्यक्ति की समस्याओं को सबसे पहले पहचाने व समस्याओं की पहचान के उपरोक्त उन समस्याओं को दूर करने के तरीके व साधनों को पहचाने व उनका प्रयोग करके व्यक्ति की समस्या को दूर करे अगर इस पर भी व्यक्ति की समस्या दूर न हो तो सामाजिक स्वास्थ्य शिक्षा की मदद ले सकते है।

साहित्यक पुनरावलोकन

प्रोटोन एवं गार्डनर (1963)

एक विशिष्ट मनो–स्थिति है जिसका महत्वपूर्ण कारक ''सांवेगिक पृथक्करण भी है। कुछ बच्चे संतुलित भोजन ले रहे है फिर भी सामान्य वृद्धि नहीं कर पाते क्योंकि वे सांवेगिक शोषण एवं उपेक्षा के शिकार होते है (दूसरे शब्दों में वे बच्चे जो कि अनचाहे होते है या प्यार नहीं पा पाते) यह सांवेगिक स्थिति वृद्धि हार्मोन में सामान्य स्त्रावण में रूकावट पैदा करती है।

लायन्च (1977)

शैशवास्था में मातृ वचन समस्त जीवित प्राणियों के लिए बुरा होता है लायन्च का मत है कि तथ्यों के आधार पर एकांकीपन व अलगाव का स्वास्थ्य से संबंध होता है उनके मतानुसार मानवीय संबंधों के विकास का जैवकीय आधार भी होता है और यदि इस आवश्यता की पूर्ति नहीं की जाती तो स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

वासरमैन एवं सोलोमेन (1982)

जन्म के पूर्व से व्यक्ति वातावरण के द्वारा पोषित होता है एवं वंचित वातावरण के द्वारा उसका हास्य होता है। इस व्यक्ति से संबंधों से वंचित होने पर या इस पारस्परिक लगाव के अनुभव से वंचित रहना अर्नथकारी प्रभाव उत्पादिक करता है जिसका प्रतिकूल प्रभाव व्यक्ति के बाद के जीवन में भी देखा जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

अनेक मनोवैज्ञानिक इस तथ्य के पक्षधर है कि एक स्वस्थ व पोषक समाज में स्वस्थ व संतुलित व्यक्तित्व के विकास का सार निहित है। किन्तु यदि समाज ही व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने व उसे विकासोचित अनुकूल वातावरण में असमर्थ रहे, तो व्यक्ति के जीवन में अनेक आशंकाओं, दुश्चिन्ताओं एवं तनावओं को प्रादुर्भाव होता है।

संभवतः यही कारण है कि वर्तमान समाज में बढ़ती अनिश्चितता ने व्यक्ति में निराशा व असुरक्षा का संचार किया है। साथ ही आजकल के समाज में विघटन की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। पहले जहाँ परिवार एक

संयुक्त ईकाई होता है। अब उसका प्रारूप भी सिमटता जा रहा है नाते–दारी व सामाजिक संबंधों की परिधि संकीर्ण होती जा रही है। इसकी वजह से व्यक्ति की कुछ सीमित सामाजिक अंतसंबंधों के कारण संतुष्टि नहीं हो पाती परिणामस्वरूप व्यक्ति स्वयं को असहाय व अलग महसूस करता है उसे लगता है कि समाज से उनके बंधन टूट गये है व वह पृथक हो गया है।

यदि समाज व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। तब व्यक्ति में वंचन की भावना और प्रगाढ़ हो जाती है। साथ ही उसकी सुरक्षा एवं संतुष्टि की भावना क्षतिग्रस्त होती है। अतः यह अन्वेषण करने हेतु वास्तव में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना व वंचन जैसे कारकों के मध्य कोई सह संबंध हैं? क्या एक कारक की उपस्थिति दूसरे को जन्म देती है? अथवा ये दोनों कारक एक दूसरे से संबंधित नहीं है? शोधकार्य का प्रस्तुत विषय निर्धारित किया गया है।

उद्देश्य

- किशोर छात्राओं में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।
- किशोर छात्राओं में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं वंचन के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि

वर्तमान शोधकार्य ''किशोर छात्राओं में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का अध्ययन'' हेतु एक उपकल्पना है जो कि परीक्षण के दौरान या परीक्षणोपरान्त यह सत्य भी साबित हो सकती है और मिथ्या या व्यर्थ भी सैम्पलिंग के लिए लोकल एरिया लेते हुए 100 किशोर–किशोरियों को रेडमली लिया जायेगा जिसमें

- सुरक्षात्मक व असुरक्षात्मक मापनी (एस.आई.एस.) डॉ. बीना शाह की मापनी का अनुप्रयोग किया जायेगा।
- दीर्घकालीन वंचन मापनी (पी.डी.एस.) डॉ. गिरिश्वर मिश्रा, डॉ. एल.बी. त्रिपाठी का अनुप्रयोग किया जायेगा।

प्रतिदर्श का आकार ⟶ कुल छात्र/छात्राऐं ⟶ 100

उपसंहार

परिणाम की तार्किकता की व्याख्या इस प्रकार से की जा सकती है। संभवतः कई अन्य कारक व्यक्ति में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना हेतु अलग–अलग उत्तरदायी है जैसे किशोरावस्था में आत्म प्रत्यय व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक व व्यक्तित्व का मापक है और ऐसा देखा गया है कि जिन किशोरो का आत्मप्रत्यय सुदृढ़ नहीं होता उन लोगों में असुरक्षा की भावना देखी जाती है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक वातावरण व पारिवारिक संबंधों में असंतुलन भी व्यक्ति की सुरक्षा की भावना को क्षति पहुँचाते है। इसके अलावा अत्यधिक तनाव, उत्तेजना, दुश्चिन्ता आदि भी वो कारक है जो व्यक्ति में असुरक्षा की भावना को जन्म देते हैं। अतः इन स्पष्ट संबंध देखा जाता है इसी प्रकार व्यक्ति में वंचन की भावना उत्पादित करने हेतु भी अनेक कारक उत्तरदायी हो सकते है जैसे व्यक्ति का स्वयं का दृष्टिकोण यदि वह अत्यधिक नकारात्मक व असंतुष्ट प्रवृत्ति रखता है तो हो सकता है कि सभी उपलब्ध साधन उसे अपर्याप्त लगे व वह अन्यों की तुलना में स्वयं को वंचित महसूस करें। किशोरों में ऐसे भी प्रमाण मिलते है कि उनमें निम्न आत्म प्रत्यय के फलस्वरूप उनमें आत्म वंचन देखा जाता है। अनेक तनावपूर्ण परिस्थितियाँ, जैसे आर्थिक वंचन प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से प्रभावित नहीं करती व्यक्तिगत चर जैसे आयु, लिंग, स्वभाव व बुद्धिमता वह महत्वपूर्ण निर्धारक है जो व्यक्ति की कठिन परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया को निश्चित करते है (ब्लोक एण्ड ब्लोक 1980, रूट्टर 1983)

अतः वर्तमान शोध के परिणाम यह इंगित करते है शोध के चुने गये चरों (सुरक्षा–असुरक्षा एवं वंचन) का एक दूसरे से संबध नहीं है। एक चर की उपस्थिति दूसरे को जन्म नहीं देती या यह अनिवार्य नहीं है कि इनमें से एक चर उपस्थित हो तो दूसरा भी हो। इस आधार पर उपकल्पना ''सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता'' स्वीकारणीय हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव डॉ. प्रीति वर्मा, (2007) बाल मनोविज्ञान बाल विकास, पेज नं–371.
2. Verma, B.P. & Nayak Lata Ranjnu - Alienation among adolescent students as related to their sense of deprivation, Apr-May1992, 1-8.
3. Chouhan S.S. (1983). Psychology of Adolescence Page No.- 204-224
4. Bhatt Dr. Mohpama (2007). Human Development A life Spam Perpesctive, Page No. 388-419
5. Arthcor. T. Sersild (1957-1963). The Psychology of Adolescence (Secnod Edition) Page No. 124-125
6. Charles G. Morries - Psychology (Third Edition) Prentice Hall in a Emglewood cliffes New Journey, 359,237-38
7. D.l. Sheparo, Psychology the science of human behavior, science research associates INC chicago palo Alto Toranto Henley on thomes sydney paris 460-69

❖◆❖